

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरीबाबा

कामठा लहरी-~~श्री~~
१९११



आश्रम कामठा

त. गोंदिया जि. भंडारा

ਸਿੱਖੀ ਦੇ ਸਾਹਿਬਜ਼ਾਦੇ ਨੇ

18 18 18



ਸਿੱਖੀ ਦੇ ਸਾਹਿਬਜ਼ਾਦੇ

ਦੇ ਨਾਂ 'ਤੇ ਲਿਖਿਆ ਹੈ

—० संदेश ०—

आज समाज की प्रगति के लिए सही रास्ता नितांत आवश्यक है। क्योंकि समाज में आज हिंसाचार का तांडव फँल रहा है। इसे रोका नहीं गया तो समाज पथभ्रष्ट हो जायेगा। पूर्व में समय के अनुसार भारत के महापुरुषों ने समाज को नई दिशा की ओर अग्रसर करने के लिए अपने भजन, काव्य, संगीत कथा-पुराणों के माध्यम से अज्ञानता में भूली जनता को सही राहों के तरफ प्रेरित करने का प्रयत्न करते रहे हैं। यही उनका उद्देश्य रहा। इसी मुताविक मैंने भी अपने भजनों के द्वारा सरल एवं सीधी भाषा में कवित्व रचना की है, ताकि समाज अश्लिलता के मार्ग से हट जाये क्योंकि आज गली-गली में अश्लिलता के गाने गाये जा रहे हैं। जिससे बुराइयाँ फैलते जा रही है। इन्हीं बुराइयों से बचाने के लिए अपने विचार भजनों के माध्यम से प्रस्तुत किया हूँ।

समाज के लोग इसे पढ़कर अपने गलत विचारों में सुधार करेंगे और अच्छे विचारों को अपनी कृति में उतारकर अच्छी उन्नति करें यही मेरी हार्दिक इच्छा है।

जैरामदास

Faint, illegible text, possibly bleed-through from the reverse side of the page. The text is arranged in several paragraphs, but the characters are too light and blurry to transcribe accurately.



-: भजन सूची :-

- | | |
|---|---|
| <p>१. धनवान करते हैं
 २. जो दया धर्म की राहों
 ३. राम नाम जपना
 ४. ज्ञान ध्यान की कदर
 ५. शोषण हो रहा मेरा पिछडा
 ६. पूरा न होवे मानवता का
 ७. जिदगी एक सफर है
 ८. आज नहीं तो कल
 ९. तुम्हे मिलने जो भी आया
 १०. सुखी करता हूँ मन
 ११. जीवन मे प्रभू तेरा साथ
 १२. सुकर्म ही मेरे जीवन के साथी
 १३. सत्य कडवा होता है
 १४. परिस्थिति करती हैं मजबूर
 १५. ऐसा खेल है रचाया
 १६. मानवता को अपनाये
 १७. जीवन मे उतारो सच्चे कर्म
 १८. जहां सुख शांति मिले
 १९. बिगड़ी बनत बन जाई</p> | <p>२०. झूठ बोलने की
 २१. मेरे देश की नीति
 २२. जो रखे पराई आश
 २३. अच्छे कर्म हमारे हैं साथी
 २४. चल उठ रे मुसाफिर
 २५. प्रसिद्धी छुगी सुकर्मों मे
 २६. पहले संतो का संग घर
 २७. दुख सुख मे किसका सुनू
 २८. जिस संगत मे है हमारा हित
 २९. सुने न तुमने हमारी
 ३०. सत कृपा से भगवन
 ३१. तू मेरा कन्हाई है
 ३२. लहरी बाबा तेरे चरणों में
 ३३. सत चरणो मे
 ३४. लोफर गुंडे लोग
 ३५. जब मानवता भ्रष्ट होये
 ३६. आज रिति रिवाज बदल रही
 ३७. सही राहो पर तू चल</p> |
|---|---|

-: भजन सूची :-

- | | |
|-------------------------------------|------------------------------------|
| ३८. लहरी चरणो का हम
को है बल | ४८. गरीबी से गुजरा जो
सच्चा नर |
| ३९. कितना सुन्दर जीवन | ४९. जो समय पर करता काम |
| ४०. मानवता को ऊंचा उठाओं | ५०. संत कृपा से |
| ४१. हैं वैसे करते नहीं | ५१. नहीं काम की भरी |
| ४२. पुरखों के वचन निभाओ | ५२. परखे आत्मज्ञानी
आत्म तत्व |
| ४३. ठोकर खाओंगे ठुकराने वाले | ५३. होती किमत दुनियां मे
वचन की |
| ४४. ओ रे मनवा | ५४. मानवता से करता प्यार |
| ४५. मित्र तू मेरा दिलवर | ५५. सुकर्म नीति जो करते है |
| ४६. संत संगत मे मिलते है
चारो फल | ५६. समझ मे आई गद्दारी |
| ४७. गरीबो को समझे गरीबी
का दर्द | |



भजन १

(चाल- संया ले गई जिया तेरी पहली नजर)

टक- धनवान करते हैं, पैसे वालों की कदर,
सभी जीवों पर है भाई संतो की नजर

समता की है जिनकी दृष्टि
जो आपत्ति में घिरे है कष्टि
इनके तरफ है सज्जन की उजर ॥ १ ॥

वातें छोड़ी पक्षपात की
भलाई हो सबके हित की
ज्ञान का विचार देवे तत्पर ॥ २ ॥

सज्जन का एक पर भरोसा
इंसानियत को दिये दिलासा
बानी में तत्व रखे अमर ॥ ३ ॥

वचन तड़ा है प्राणी से भी
तन से प्राण हरे कोई भी
तन लीन रखता कभी भी फिकर ॥ ४ ॥

जैराम ब्रम्ह ज्ञान मतवाला
अपना और पराया भेद भूला
किर्ती, छोड़कर, गया ऐसा नर. . . ॥ ५ ॥



भजन २

(चाल- है प्रीत यहां की रीत सदा)

टेक- जो दया धर्म की राहो, अपना ये फर्ज निमाता है ।
देश के वास्ते हर वक्त, मरने को तत्पर रहता है ॥
ऊंच नीच का भेद नहीं प्रेम का नाता निभाता,
चीढ़ उसे झूठी राहों की, स्वाभीमान से जीता है ॥ १ ॥

कोई करे उसका मान अपमान
तनिक न उससे डरता है
सत की राह पकड़ा जिसने
कभी मौत से न घबराता है ॥ २ ॥

ढलता हो गर आसमां
उसकी न कभी कोई चिंता है
रण में उतरा है जो वीर
पीछे न कदम हटाता है ॥ ३ ॥

समी प्राणी की भलाई का वादा
परोपकारी जीवन बिताता है
समाज में हरियाली लाना
उसका यही इरादा है... ॥ ४ ॥

जैरामदास कहे घरती मां का
वही सच्चा सपूत है
हर ठिकाने विजय - २
अमर कीर्ति छोड़ जाता है ॥ ५ ॥



भजन ३

(चाल- तुझे भूलना तो चाहा)

टेक- राम नाम जपना पराया माल अपना
साधू और संतो का पहने रहते बाना

सज्जन भी ढोंगी कहलाये
झूठे को न परख पाये
ऐसे ही लोग अज्ञानि का करे हर्जाना ॥ १ ॥

झूठ मूठ की चलाये बानी
छल कपट ही दिल में ठानी
कैसा घन द्रव लूटना, कैसा किसको फंसाना ॥ २ ॥

फेला है स्वारय चारों ओर
कोई न करते इस पर गौर
मानवता का मिट रहा निशान, कैसे शांति पाना ॥ ३ ॥

विद्वानो से अर्ज है मेरी
गद्दारी से बचाओ समाज सारी
तभी होगा रामराज का साकार सपना ॥ ४ ॥

नही दिया इस तरफ किसी ने ध्यान
देश समाज का होगा पतन
जैरामदास का यही है कहना ॥ ५ ॥



भजन ४

(चाल- परदेशियों से न अखियां मिलाना)

टेक- ज्ञान ध्यान की कदर करते छलिया
बुरे काम में बिताये उमरिया
चमक दमक पर भूली हैं दुनिया

नकल- २ का बढ रहा जोर, अकल वाले ही रहे बोर
अश्लीलता के गीत गाये, गली गलियां ॥ १ ॥

पुरखो के वचनों पर देते न ध्यान
आज्ञा पालन न करते करे अपमान
गलती कर के भी करे उजरिया ॥ २ ॥

बिगड रही प्रेम की नीति
मर्यादा की ही, रही दुगंती
अनीति की बढ रही बोमारियां ॥ ३ ॥

कहता जैराम संत, का पथ पकड़ा
मिट गया उसका पाप, कर्म का दुखड़ा
सच्चे का साथी है, वो सांवरिया ॥ ४ ॥



भजन ५

(चाल- लेके पहला पहला प्यार)

टेल- शोषण हो रहा है मेरा पिछड़ा समाज
भूखे रहते है बच्चे उनके, देखो आज

गुंडे लोफर हो रहे माला माल
भोले जनो को करते बेहाल
विद्वानों निकालो इनका हल
तभी तो बचेगी अपने देश की लाज ॥ १ ॥

घम के नाम पर, कितना पैसा लूटते
लंबी चौड़ी वो गाल बजाते
भेष साधू का बना, करते है काज ॥ २ ॥

दुनिया में फैल रही, नकल-नकल
सच्चे आदमी की गुम-गुम रही अकल
विनास की ओर, जा रहा है ये समाज ॥ ३ ॥

कहता जैराम, दुर्जन, सज्जन न परखी
वैसा उनसे व्यवहार रखो
निभावो मानवता का फर्ज, तभी मिटेगा ये मरज ॥४॥



भजन ६

(चाल- कर न सके हम प्यार का वादा)

टेक- पूरा न होंवे मानवता का वादा, मिटे न जब तक अज्ञानता
चाहे कितनी करे कोशिशे, जूड़े न नाता सही कर्म से

काम क्रोध आशा तृष्णा
मिटे न मन की कमी कल्पना
भ्रम- २ में उमरिया बीते
कभी न मिटे ये विपदा ॥ १ ॥

विषमता से फूट पड़ी है
अपने आप हानि की है
जीवन बिताये नेक नाम से
ठखंड मिले सुख शांती सदा ॥ २ ॥

जुवां पर हो दया, धर्म की वानी
अपने आपको, परखा ज्ञानी
होंवे न कभी उसकी हानि
जनम मरण का मिटा फंदा ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे, अपने को परखा
बुरा न किसी को, सपने मे देखा
इंसानियत का है वो भूखा
वो ही है प्रभू का बदा ॥ ४ ॥



भजन ७

(चाल- मेरे प्यार की तमन्ना गमे जिदगी)

टेक- जिदगी एक सफर है, सच झूठ का खबर है,
जनम-मरण, एक खबर है

अच्छे बुरे दो राहे है,
जिधर जाये उसका फल पाये,
मन वैसा ही दर्शाये,
विवेक मानवता सिखाये . . . ॥ १ ॥

विचार विना सच्चा ज्ञान नहीं,
आधार विना व्यवहार नहीं,
धैर्य ही सच्चा शांति दिलाये,
तत्व ज्ञानी हुये अमर हैं ॥ २ ॥

अमर तत्व में अमर किर्ती,
परखे विना न होये उन्नति,
जाना वही जो सूर वीर है ।
जिदगी ॥ ३ ॥

दुलभ है मानव जनम,
आये जनम कर ले जतन,
परख ले तू ही अपना वतन,
जैरामदास तुझे दर्शाये
सत्सग से मिटा ले भरम है ।
जिदगी . . . ॥ ४ ॥

भजन ८

टेक- आज नहीं तो कल सच झूठ का मिलेगा फल
अपनी राह परखते चल यहां अपनी
कर्म भूमि है नाम इसका- २
फर्ज अदा करो मानवता का- २
उदय होगा भाग्य तुम्हारा, संतों की राहों पर चल ॥ १ ॥

ये दुनियारी है दो दिनों की
झांकी भरी है ये सपनों की
तन से हंसा निकल जायेगा
मच जायेगी हल चल ॥ २ ॥

पूर्व पूण्य से नर जन्म पाया
क्या खोया है और क्या है बचाया
ज्ञान बुद्धि का लेकर सहारा
समय न खो अनमोल ॥ ३ ॥

बनना है तुझको नर का नारायण
परख ले तू श्वास रूपी घन
किसकी रात हैं और किसका दिन हैं
खाये मत तू भूल !... यहां अपनी ॥ ४ ॥

कहे जैराम इहलोक परलोक साध
छोड़ दे तू झूठी वकवाद
कल करने का आज ही करले
अपना अपना सफ़न ॥ ५ ॥

भजन ९

(चाल- तुझे भूलना तो चाहा)

टेक- तुम्हे मिलने जो भी आया
मन की मुरादे पाया
वो मेरे लहरी बाबा- २ वरसाओ सुख की छाया ॥ टेक ॥

जीवन है एक सागर, जिसकी हजार दूरिया
जहां फूल हैं वहां कांटे, यह सब अनोखी माया
तुम ही सबके भाग्यदाता, तुम्ही सब के हो कहैया ॥ १ ॥

तुम संग ही हमने बांधा
भक्ति का प्रेम धागा
कभी भूल हुई हमसे
अच्छे भलाई की बातें, तुमने हमें सिखाया ॥ २ ॥

हो इस जहां के मालिक
पावण परम पिता श्री
पावों में पदम शोभे
हे प्रभूजी करुणाधारी
गुरुदेव जी हमारे- २ लगाओ पार नय्या ॥ ३ ॥



भजन १०

(अपना दिल हम छोड़ चले)

सुखी करता है मन ये हमारा
जितने समझा इसका इशारा
उसकी नैया हुई भवपारा

नेक राहों पर चलते रहेंगे
समय के हर संकट हल होते जायेंगे
ज्ञान की दरिया में नहाते रहेंगे
मिटे द्वेष भाव का क्लेश हमारा ॥ १ ॥

मुखड़ा देखो मन दर्पण में
नर नारायण देखो तन में
मत खोजो वन वन में
कण कण में वो हैं भरा ॥ २ ॥

सुंदरता है कर्म की बेला
भाग्य का करे वही उजाला
गरीब बन जाये धनवान विचारा
जीवन बने उसका हरा भरा ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे, हल निकाला
मानवता का वो है रखवाला
इंसानियत का सच्चा तारा ॥ ४ ॥

भजन ११

(चाल- जीवन मे प्रभू तेरा साथ रहे)

टेक- जीवन मे प्रभू तेरा साथ रहे
हर वक्त तेरी, याद आती रहे... जीवन मे

कितनी भी कठिनाई, आये मुझ पर,
धैर्य न छोटे मेरे, मन के अंदर,
सच्चे सुख शांति का, होवे मुकद्दर,
दीन दुखियों से प्रीति जुड़ती रहे- जीवन ॥ १ ॥

मेरे मित्र बने, हर जीवन प्राणी,
द्वेष भावना, ना रहे बनी,
झूठ मूठ की, चले ना बानी,
सबका भला हो ऐसे ज्ञान की
दरिया बहती रहे... जीवन मे ॥ २ ॥

सबके हित की वाते, मेरी जुड़ा पर चले
अनहित न किसी का, होने पाये,
प्राण जाये पर न वचन टले,
मानवता की जोत जलती रहे... जीवन मे ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे, अरज मेरी
दौडकर आना, तुम गीरधारी
लगाओ ना प्रभू, तूम देरी
कुछ ना मांगू, यहीं मूझे भाये... जीवन मे ॥ ४ ॥

भजन १२

(चाल- मेरा प्यार वो है)

तज टेक- सुकर्म ही मेरे, जीवन के साथी
इसमे मिले मुझे, सच्ची शाश्वती

चाहे दुनिया, रुठी हो मुझ पर
भरोसा है मेरा, ईश्वर पर
जुदा न करे, किसी की शक्ति
सद्भावना की है मेरी शक्ति ॥ १ ॥

मानवता का है मेरा संदेशा
किसी के धन दौलत की, मुझे नहीं आशा
सत के पथ की है, मेरी नीति
झूठी बात न, मुझको सुहाती ॥ २ ॥

बंज्रुत्व प्रेम हो सभी जीवो का
नाता निभाये भाई चारे का
भोजन पाये अपने मेहनत का
सबको मिले, अखंड शांति ॥ ३ ॥

अज्ञानी को, ज्ञान देवे
अंधकार ये, सब मिट जाये
सोये किशमत के, जग जाये ज्योति
आये ना मन मे कभी कुमस्ति ॥ ४ ॥

जंरामदास कहे, सत पर भरोसा
क्यों करे हम, पराई आशा
दिलवर ही है, दिल का दिलासा
साधू संत है, हमारे साथी ॥ ५ ॥

भजल १३

सत्य कड़वा होता है पर, उसके परिणाम मीठे
परखा जिसने इन शब्दों को मन की भ्रमता मिटे

सही राहों पर जो चलता है, आये कितने ही अड़ंगे
हिम्मत न हारे अपनी कभी, मिटे उलझन झगड़े
सिद्धांत का पक्का जो नर, अंत में विजय पावे ॥ १ ॥

दुष्ट कितना भी रूठे, अपने तत्व न बदले
चाहे आसमां भी ढलता ही असत्य कभी न बोले
तन की बाजी उसने लगाई चाहे प्राण भी लुटे ॥ २ ॥

दृढ़ता का है संकल्प उसका, रखें ना डर किसी का
चिंता फिर तनिक न रही, मान अपमान करे कोई
सब पर ही उसका भरोसा, फल पावे वो मीठे ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे वो पहना, नेक दानी का बाना
सज्जन करे उसकी सराहना, सेवकाई का गाये गाना
अमर रहता नाम उमका, किर्ति कभी न मिटे ॥ ४ ॥

भजन १४

परिस्थिति करती है मजबूर हर पल
जिसने इसको जाना, उसका जिवन सफल हुआ

गुजरे है राहों से राम और कन्हैया
कभी धैर्यं नाही छोड़े, मानव ने भ्रंया
हरदम टकराते रहे, लेकर आत्म बल ॥ १ ॥

मिटाये उन्होंने, अज्ञानता को
दमन कर दूर किया दुष्ट वृत्ति को
दानवता में मचती रही हरदम हलचल ॥ २ ॥

मानव मानवता से, आज जोड़ देना है
जिवप्राणी के नस-नस मे, सुख शांति भरना है
विचार शक्ति की क्रांति का
जैराम चलाये हल..... ॥ ३ ॥



भजन १५

वाजीगर ओ वाजीगर,
कारीगर ओ कारीगर,
लहरी वावा वो कारीगर,
ओSS - ऐसा खेल है रचाया,
ऐसा खेल है खिलाया,
लिया सबका तू मन मोहकर ॥ टेक ॥

वाणी का जादू चलाके ।
सबके मन निर्मल बनाया ॥
ज्ञान की बरखा बरसाके ।
सबको है जीना सिखाया ॥

ममता का देकर सहारा ।
भावना मन में जगाया ॥

दुख का अंधेरा मिटाके
खुशियां भरी धूप खिलाया
ओSS - सच्ची राह है दिखाया
सारे दोष है मिटाया
देखो कैसा है वो जादूगर
कारीगर वो कारीगर... ॥ १ ॥

आओ सभी मेरे भाईयो ।
आनंद के इस भवन में ॥

पुण्य की दौलत वहां ।
ले लो सभी इस जनम में ॥
प्यार की, गंगा बहे
आओ नहाये, सब मिलके ॥
ऐसा दर मिलता नही
आओ देखो वहां चलके ॥

ओऽऽ - मानवता के पुजारी
ऐसे सच्चे हितकारी
आज आये हैं वे धरती पर
कारीगर ओ कारीगर ॥ ॥ २ ॥

कवि
श्री भदन यादव

गायक
श्री गुणवंत जाधव
नागपुर

भजन १६

चाल- (हां तुम मुझे यूं भूला ना पाओगे)

टेक - मानवता की अपनाये नीति
देश समाज की होये उन्नति
मिले सबको, सुख और शांति

भावना प्रद हो सभी के विचार
सत्कर्मों का होवे संचार
मुरझाई कलियां, खिल जाती ॥ १ ॥

क्लेश न रहे द्वेष भाव का
एक दूसरे के प्रति, होये सराहना
प्रेम भाव की रहे मति ॥ २ ॥

होवे नाश विषमता का
मार्ग अपनाये सबके हित का
जैराम भूले न कभी कर्म धर्म को
न भूले कभी दीन दुखियों को
यही अपनी भारतीय संस्कृति ॥ ३ ॥



भजन १७

जीवन में उतारो सच्चे कर्म
तब मिटेगा तुम्हारा भ्रम

शालीनता का मन में वास
किसी की न रखो दिल में आस
हमारे साथी है सुविचार की बानी
नादानी बरतने से होती है हानि
नेक नामी से करो श्रम ॥ १ ॥

सच झूठ का फल भाग्य से जुड़ा
जिसने इसको निहारा
सुख शांति का पाया उजाला
मिट गये सारे दुरम ॥ २ ॥

जैरामदास कहे नेकी बदी दो राहे
जिस ओर जाये वो फल पाये
विचार शक्ति हमारे साथी
हर वक्त मिले हमें सुमति
नाम छोड़ जाये अमर ॥ ३ ॥

भजन १८

दोहा - तरने के वास्ते लीनता
डूबने के वास्ते अभिमान
समझा नहीं ममं को,
कैसे कहे इन्हे विद्वान (संत जैरामदास)
(चाल- अजब तुझे सरकार)

टेक - जहां (हमको) सुख शांति मिले वही (हमारा) तीर्थ है
(हमारा) सच्चा यही (हमारा) ब्रज है
पानी और पत्थरों की सभी ठिकाने है मूर्तियां
(वहां) हर प्रकार की है वृत्तियां
सत्य का पालन करना यही जरूरत है ॥ १ ॥ हमारा

छोटी और बड़ी नदियां, समुंदर में मिल जाती है
आत्मानंद की, झरिया बहती है
ऐसे जीव मुक्त होत है ॥ २ ॥ (सच्चा)

असुरी दैविक, दो है पहिया
अलग अलग है, इनका रवैया
परखे वही है, सच्चा खिच्य्या
(भवसागर से पार वही करत है)
भव पार करत है ॥ ३ ॥ (हमारा) ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे गुरु, (हमारा) तीरथराज
उसके बिना न सुघरे, (विगड़े हमारे) काज
कोई लाखों करे चतुराई
कृपा बिना, (कोई) ना तरत है ॥ ४ ॥ (हमारा)

भ्रजल १९

दोहा— लूटना है तो लूट ले, संतो की ज्ञान दरिया में
बितानी हैं उमरिया, विद्वानों की नगरिया में
जैराम कहे सुनले साधक, बिक जा तू शांति के
बजरिया में ।

टेक - बिगड़ी बनत बन जाई रे भाई
गुह आज्ञा बिन जीवन, सफल न हो पाई
चाहे लाखों करे चतुराई

शास्त्र पढ़त उमरिया बीत जाई
होई न जीवन कभी सुखदाई
भाई...! ॥ १ ॥

कितने तीरथ, अत किये
मन की भ्रमणा, न मिट पाये
शांति न मिल पाई रे मेरे भाई...! ॥ २ ॥

आसन मुद्रा ध्यान लगाये
ब्रम्हाण्ड में प्राण चढ़ाये
फिर भी क्रोध अपना, रंग दिखलाई रे भाई ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे, नैया का खिचैया
वहीं हमारा जीवन तरैया
गुह कृपा बिन रहे, जीवन दुखदाई ॥ ४ ॥

भज्ज २०

(चाल- दोनो ने किया था प्यार मगर)

झूठ बोलने की, न उन्हे शरम
पाये जाते हैं, कितने बेशरम
छुपाये गलतियाँ, इमानदार दर्शाया
करे बुरे करम

ऐसे लोगों से हो रही फजौती
सज्जन की हो रही दुर्गति
आज चल रहा है, ऐसा रवैया
डूब रहा है मानव धर्म ॥ १ ॥

कुचला जा रहा है, इमानदार
उसके पीछे लगी है तकरार
दुख खंकट के बिरला जाने मरम
पाप बट रहा सीमा चरम ॥ २ ॥

१७७७

जेराम कहे कैसा, आया जमाना
सत्यवान को, न मिला घेना
पानी बहे नैना
प्रभू दूर कर उधम
पाये जाते है, कितने बेशरम ॥ ३ ॥



भजन २१

(चाल- मेरे देश की धरती सोना उगले)

टेक- मेरे देश की नीति, ज्ञान सिखाती,
सबको शांति दिलाती, मेरे

अज्ञानी को वो ज्ञानी बनाये, दया धरम सिखलाती है
सत्य अहिंसा के मार्ग पे चलना, यही मंत्र गुनगुनाती है ।
सभी मजहब एक राहों पर - २ द्वेष भाव मिटाती ॥ १ ॥

एकता में है सबकी भलाई, कभी न देखी किसी की बुराई
प्रेम देना प्रेम लेना, आत्मीक प्रेम दर्शाती है
अपना पराया भेद भूलाकर बंधुत्व नाता सिखाती है ॥ २ ॥

आध्यात्मीक का जीवन बने, सत्य की बानी सभी सुने
सती संतों के आज्ञा का, निष्ठावान हर कोई बने
जैरामदास कहे मानव मंत्र से, विश्व शांति को दिलाती ॥ ३ ॥



भजन २२

(चाल- रमंयया वता वैया)

टेक- जो रखे पराई आश, होवे न उसका विकास
क्रिया उसने अपना घात- २

कही ना मिली, उसको सुख और शांति
मिटी न हैं कभी, उसके मन की भ्रांति
जीवन में न, किया कहीं उन्नति
तनिक है न उसमें ज्ञान की शक्ति
रोता रहता है लेके, नसीब पर हाथ ॥ १ ॥

खुद पर नहीं, खुद का विश्वास
खोता है व्यर्थ में, वो उमरिया श्वांस
पृथ्वी पर भार हुआ, वह मूरखदास
काम ना आया, मानवता का किया नास ॥२॥

इहलोक परलोक न इसने साधा
ऐसा जन्मा है यह पाजी गधा
राम नाम पर, किया न विचार
अड़ी है नैया बीच मझघार
ऐसा है, सुनो इनका इतिहास ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे न किसी का भला,
दुविधा मे समय बीत चला,
संगत करने से होगा घोटाला
जन्म मरण का लगे फेरा,
बैठो न इनके पास ॥ ४ ॥

दोहा :- सत्य के पथ पर चलना यही है मानवता
सही राहों पर चलना सीखाये देवता
तन छूटने पर बने तेरी गाथा
अमर पद का हो जा तू दाता
युग-युग रहे तेरी याद दास्ता



भजन २३

चाल- (मां को दुनिया का देवत समझले)

टेक- अच्छे कर्म हमारे है साथी,
इसमें भरो है, हमारी सद्गती,
परखे बिना मिले न शांति,

सुविचारों की होवे वृत्ति,
तभी मिटे भ्रमिष्ट बुद्धि,
सबको पसंद हो, ऐसी जुवां चला,
हो भला ऐसे, देते जा सला,
- कभी न कोई तुझको भूले,
रहे तेरी जनम जनम यादे ... ॥ १ ॥

भले ही तुझको, कोई भूले,
तेरे तख को लेकर चले,
- छुटने पर तन किर्ती न ढले,
अमर रह जायेगी तेरी कीर्ति ... ॥ २ ॥

है मुसाफिर तू चलता फिरता,
किसी के रोके न है तू रुकता,
- प्रभू के हाथ हैं तेरी सत्ता,
कथा हैं तेरी जीती जागती ... ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे पायां नर जनम,
परखते चल तू अपना वतन,
होने न पाये तेरा पतन,
- शक्ति से बड़ी होती हैं युक्ति,
न बिगाड़े तेरी कोई संस्कृति

भजन २४

(चल उड़ जा रे पंछी)

टेक- चल उठ रे मुसाफिर तू, समक्षले संतो की
ये भाषा-चल,

सब जीव प्राणी को मिले सुख शांति
सुखी संसार बनाये
कमी न होये, किसी वस्तु की
जीवन सफल बन जाये,
आध्यात्मिक के ज्ञान शक्ति से,
दुख संकट मिट जाये ... ॥ १ ॥

स्वयं निर्मित है चेतन विज्ञान,
संतो के शब्दों में,
मूढ़ समक्षले तो ज्ञानी बन जाये,
मिले अमर तत्व में,
कितना भी वो भाग्य हीन हो,
भाग्य वान बन जाये ... ॥ २ ॥

चिता फिक्र उसे न सताये,
ज्ञान बुद्धि सिखलाये,
दृढ़ निश्चय, अटल सिद्धांती,
त्रिपाप मिट जाये,
दुख सुख न उसको व्यापे,
आप खुशियाँ मनाये ... ॥ ३ ॥

जैराम दास कहे, बना मतवाला,
पिकर ब्रम्ह प्याला,
वो ही गुरु और वो ही चेला,
त्रिभूवन का रखवाला,
बिरला समझे उसकी स्थिति,
सत संगत जो किये ... ॥ ४ ॥

भज्ज २५

(चाल- मेरा वो है)

टेक- प्रसिद्धी छुपी सुकर्मों में ही
कही ना बांधे उसे कोई व्याधी

सत्व का मार्ग जिसने पकड़ा
यम से भी वो करता झगड़ा
कभी न उसका कार्य बिगड़ा
अटल सिद्धान्ती को उड़ाये न आंधी ॥ १ ॥

विश्व में देखे विश्वनाथ को
धैर्य से हिम्मत देवे मन को
आत्मराम का गया वो कारण
परब्रम्ह का मतवाला जिही ॥ २ ॥

तन मन धन न्यौ, छावर किया
राम के बिन ना कोई सुहाया
धन दौलत, उसने ठुकराया
सब जीवों का जुड़ा सबधी ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे, ऐसा मतवाला
अपना पराया, भेद वो भूला
रहता जग है वो निराला
पानी भरती, रिही सिद्धी ॥ ४ ॥

भजन २६

(चाल- जिनका घर हो अयोध्या)

टेक- पहले संतो का संग घर,
तब ही होगी आत्मा उन्नति,
मिलेगी तुझे सही सुख शांति

क्यों भूल रहा, इस माया जगत में
यहां न कोई तेरा भाई
व्यर्थ ही उमर गमा रहा
जीवन की कर रहा मांटी ॥ १ ॥

पूर्व पूण्य से नर जन्म पाया
इस तरफ तुने ध्यान न दिया
धर्म कर्म को तू भूल रहा
अज्ञान निद्रा मे सो रहा
छोड़ दे अब तू झूठी भ्रांति ॥ २ ॥

अमोल किंमत का एक- २ श्वांस
इस पर रख सही विश्वास
इस मे ही मिले तुझे दिलासा
पगले मत बन माया का दासा
प्रभू पाने की देख संस्कृति ॥ ३ ॥

क्षण भंगूर, है यह जगत
छोड़ दे तू झूठी भास
परख ले अपने हित को
सुकर्म का गा ले गीत
मानव की यही है ख्याति ॥ ४ ॥

जैरामदास कहे जैसा करता,
वैसा ही फल पाता
कोई किसी का साथी नहीं है
अच्छा बुरा देखता विघाता
परख ले अमर ज्योति ॥ ५ ॥



भजन २७

(चाल- देख री यशोदा मैया तेरा ये कन्हैया)

टेक- दुख सुख मे किसका सुनू, कर्म की गतियां,
किया वैसा पायेगा, विधि का लिखिया,
ओ सुनो मैया, धर्म नितियां

करनी जो जैसा करता, फल वैसा पाता
वैसा ही वो भोगता, चुके ना किसी को
चाहे वो देवी देवता ही, जैसे करे कृतियां ॥ १ ॥

घरती पर जो जन्म लिया,
अपना हित अनहित न परख पाया
समय व्यर्थ खोया, दुविधा मे गया
कर्म अपना नही परखा, हुई दुर्ग्तियां ॥ २ ॥

अच्छा करा परखा राही
जीवन किया उसने सुखदायी
निति नियम से काल वो डरता
सत्य वान अमर होता
जैरामदास कहे, पार हुई उसकी नैया ॥ ३ ॥

भजन २८

(चवल- तू ने छोड़ दिया रे मेरा साथ)

टेक- जिस संगत में है हमारा हित
उससे जोड़ी अपनी प्रीत
तभी होगी तुम्हारी जीत

साथी है राहों पर अच्छे बुरे
परखतं चल वादे होवे पूरे
गफलत मे तू मत भूले
होगा तेरा रे अनहित ॥ १ ॥

स्वाधियो का मेला, जहां वहां
अपने ही वो गाल बजाये
मतलब का ही गाये गाना
ऐसे ही ढोंधी मिलते मित ॥ २ ॥

किसको कहना अपना पराया
दिल जब ढूँढा है उनका
अपने आप ही वो कतराये
बुराई का गाये वो गीत ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे बिना सोचे बुझे
करो न तुम कोई संगत
नहीं समझ तो होगी बुरी गत
आंखो पानी आयेगा नीत ॥ ४ ॥

भजन २९

(चाल- परदेसीयों से न अंधिया मिलाना)

टेक- सुने न तुमने हमारी कोई बतिया
चले लेकर कैसे तुम्हारी नितियां
पटे न तुम्हरी बाते, हम करे नफरतियां

जब तक तत्व बानी का, जुडे न मेल
दुविधा का है तुम्हारा खल
हमे कैसे शांति मिले, सुने उजरिया ॥ १ ॥

माया के तरफ है, तुम्हारा मुख
कैसे मिले हमको सुख
अगिती की भूख करी, तुम्हारी रीतियां ॥ २ ॥

धोखा- २ हर वस्त पाया
कितना दुए सरपे आया
भोलेपन का उठाया फायदा, कई खाया ठोकरिया ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे, सत का पथ पकड़ा
सब जीव प्राणी ने राम को देखा
मानव मित्रता रखा पाया परम गतियां ॥ ४ ॥

भजन ३०

(चाल- घुंघट की आड़ से दिलवर का)

टेक- संत कृपा से भगवन का, दीदार यकी में होता हैं
जब तक न पड़े गुरु की नजर, उद्वार अधूरा रहता है

जम्मों- २ तक भटका, मानव तन मिला
कैसे पाऊं तुम्हे जीवन बिरथा चला
जकड़ती ही जाये माया मोह की ये झंझटे हो
सत्कर्मा के अभाव में, वैराग्य अधूरा रहता है ॥ १ ॥

नाना यत्न करे फिर भी दिखे न ज्योति
कैसे पाये जीव, सुख और शांति
मन में कल्प और विकल्प उठते ही जाते हैं
भक्ति भाव के अभाव में, परमार्थ अधूरा रहता है ॥ २ ॥

कहता जैराम प्रभू नेनों को है तारा
सब में रहकर भी है वो सबसे न्यारा
जन्म मरण छूट गया, मिल गया निज स्वरूप ही
गुरु आज्ञा के अभाव में, सत्संग अधूरा रहता है ॥ ३ ॥

भजन ३१

(चाल- तू मेरी जिंदगी है)

टेक- तू मेरा कन्हाई है- २
तू ही लहरी, तू ही साई, तू ही सुखदाई है

भक्तों का रखवाला है तू
दुखियों की करुण पुकार है तू
तू ही मेरा अपना साथी,
बाकीं दुखदायी है ॥ १ ॥

सच्चे को हैं तेरा साथ
झूठे से न करते बात
दानव को मानव बनाया
करता है भलाई ... तू ॥ २ ॥

दीखता हैं तू भोला भाला
तेरा खेल है, अजब निराला
दिल में रहकर भी,
रहता विदेही ... तू ॥ ३ ॥

तेरी कृपा से तुझको पाऊ
तेरे वचनों पर मर-मर जाऊ
तुझसे बड़ा न कोई
जाने पीर पराई ॥ ४ ॥

भजन ३२

(चाल- जुबा जुबा पर होगी तेरी मेरी प्रेम कहानी)

टेक- लहरी बाबा तेरे चरणों में,
मिले सुख और शांति
दया करना मुझ पर ऐसी,
युग- २ तक रहे प्रीति

कितनी मुसीबत आई मुझ पर
दर-दर की खाई ठोकर
किसी का ना मिला सहारा
जब तक रहा तुझ से बेखबर
दुख ही दुख मिला है, सब स्वार्थ के साथी ॥ १ ॥

तेरी राहे मुझ को भायी
विपदा सारी खत्म हुई
दुनियां की झंझट न रही
तुम्हीं मेरे, कृष्ण कन्होई
अपना पराया छूट गया
जुड़ गई नीति से प्रीति ॥ २ ॥

कण २ में मैं देखूं तुझे
तेरे सिवा न कोई भाता मुझे
कभी क्रोध, कभी प्रेम करे
फिर भी वादे, पूरे करे
कर दो पार नैया मेरी
देके अपनी भक्ति ॥ ३ ॥

भजन ३३

(चाल- तुम से मिलने को दिल करता हूँ)

टेक- संत चरणों में ही रहना रे वावा
सुख शांति मिले, जीवन सफल करना
लहरी नाम भजते ही रहना

लाखो जन्मों के पुण्यों से नर तन मिला
भज लो हरि नाम जीवन में होगा भला-- ३
स्वास व्यर्थ में न खोना रे वावा

लहरी नाम ॥ १ ॥ लीपट्ट

इस जगत में तुम्हारा कोई नहीं है

संकेत वक्तव्यों से लीपट्ट है तुम्हारी

लहरी नाम भजते ही रहना

लहरी नाम भजते ही रहना... ॥ २ ॥

संत ही होते हैं, जन्मों के जन्मों में
होनी को भी कर सकते है अन होनी
गुरु वचनों में मरना मीटना रे वावा
लहरी नाम भजते ही रहना

कहता जैराम, संतों का लोकोपकार
मानव मंदिर का कर लो जीर्ण उद्धार
इसानियत की रक्षा करना रे वावा
लहरी नाम भजते ही रहना... ॥ ४ ॥

॥ ४ ॥ लहरी नाम भजते ही रहना

भजन ३४ (स्वतंत्र)

टेक- लोफर गुंडे लोग आज भौले,
लोगों को करते परेशान
इनकी जगत मे बढ़ रही शान
सज्जन का करते अपमान

फैल रही जहां वहां अनीति
भ्रष्ट हो रही मानव नीति
पाप पुण्य का विचार न मन में
हो रही दुर्गति
गरीब हो गये है हीरान ॥ १ ॥

जहां वहां स्वार्थ का मेला
झगड़े तूफान का बढ़ रहा झमेला
हिंसाचार की बढ़ रही बेला
बे कसूर की जा रही जान ॥ २ ॥

छोटे न करते बड़ों की कदर
गलती करके ही करते उजर
परधन पर वो रखते है नजर
कैसा खेल है अजब भगवान ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे फैले ढोंगी
अपने पेट की बजाये पोंगी
सत्यवान के बिरले संगी
दर दर ठोकर खाये विद्वान ॥ ४ ॥

भजन ३५

(चाल- हो जब- २ प्यार पे पहरा हुआ है)

टेक- हो जब जब मानवता भ्रष्ट होये
जीव को शांति न मिल पाये
निसर्ग साथ न देवे - हो ॥
अधित घटना घटती रहे
पृथ्वी पर सत आये - हो ॥

विधि का लिखा कभी न मिट पाये
जैसा बोये, वंसा उगे
भगवान को भाये, कर्म फल देवे
कोई भी छूट न पायेगा-- २
कितना भी बी छुपायें
जीव को न शांति मिल पाये - हो ॥ १ ॥

अनिति का होये, हर दम बोल बाला
सच्चे के मुंह को लगे ताला
किसे न किसी की रहम
भ्रम में जाये जीवन
शांति कहीं न पायेगा
दुविधा में समय बिताये - हो
अहंकार मिट जाये
जीव को ॥ २ ॥

जैरामदास कहे, संतो से जोड़ा नाता
उसका साथी है विघाता
किती छोड़ जाता, युग- २ जिदा रहता
कहीं न पड़ती कमतरता
अज्ञानता को मिटाये - हो ११
वो ज्ञान सबको सिखाये
अमित तत्व छोड़ जाये-
हो ११ जब जब ॥ ३ ॥

भजन ३६

(चाल- राम तेरी गंगा मंली हो गई)

टेक- हो आज रिति रिवाज बदल रही बुरे कर्म देख देख के
हो SS देख के अनिति हो SS - २
माहूल, सज्जन रोते रोते

कर्म धर्म को लगा बट्टा, खेल रहे जुआ सट्टा
सज्जन आदमी, हो रहा लुच्चा, दुर्जन कर रहे पिछा
सच्चा हो रहा खराब, दर दर की ठोकर खाई
हो आज रिति रिवाज . . . ॥ १ ॥

दुख ही दुख है चारो ओर, बढ़ रहा पाप घनघोर
हिंसाचार का हो रहा बोल वाला, इमान जा रहा कुचला
अज्ञानी भोला रो रहा बिचारा, देता न कोई सहारा
मेहनत की करे कमाई, उसकी बुरी गति आई
निसर्ग छोड़ रहा साथ, तकरार बढ़ रही ॥ २ ॥

बिता में पड़े मानव प्राणी, रोग राई से हो रही हानी
दानवता की चल रही बानी, ज्ञानी हो के बने अज्ञानी
रहम न किसी की रही, दुनियां पतन में जा रही
कहता जैरामदास, सतयुग किरला देख पाये ॥ ३ ॥



भजन ३७

(चाल-कौवाली)

टेक- सही राहो पर तू चल
न कर मन को हल चन,
होगा तेरा जीवन सफल... होगा...

छोड़ कीर्ति यहां से जाना
तेरा ही तुझ को है पाना
भायेगा भगवन का परवाना
अच्छे बुरे का फल है पाना- २
बुरी राहें अब तू भूल... सही ॥ १ ॥
तन मिला है, मानव का- हो ५
करम करता है, दानव का
परखना नही सुख और दुख
छाँक सुख से मिटती न भूख- २
उमरिया तेरी जा रही ढल... सही ॥ २ ॥

अरे तू माटी का है पुतला
अकडते एंसा क्यों चला
देख ले तू अपना भला
संतो से ले ले सला- २
खोज ले तू निवारण हल... सही ॥ ३ ॥
मन में भरी है गहारी- हो ५५
बता रहा अपनी होशियारी
एक दिन खुल जायेगी पील- हो
मोठा सबसे तू बोल- २
जैराम कहे सत्साथी हर पल सही... ॥ ४ ॥

भजन ३८

(चाल- बहुत धार करते है तुम से)

टेक- लहरी चरणों का हमको है बल
ले लो सहारा जीवन होगा सकल

मुसीबत कितनी चाहे, हम पर आये,
तेरा नाम लेते, पल में मिट जाये,
नाम प्रताप ऐसा, डरता है काल... ॥ १ ॥

संसार सागर बड़ा ही कठिन है,
करोगे पार भव से, हमको यंकी है,
विश्वास तुम पर, हमारा भटल... ॥ २ ॥

चारों तरफ हैं, असुरों का राज
करो न देते, परमार्थ के काज
तेरे भरोसे हम, होंगे निहाल ॥ ३ ॥

जिम्मेदारी सबकी, अपने सर लेते
प्रपंच परमार्थ सबका, सुखी बनाते
झूठी राहों से हमको बचाते हर पल ॥ ४ ॥

दे के सहारा हमको, अपना बनाये ।
तुम्हारे सिवा हमको, कोई न भाये ॥
आर्शीवाद दो ऐसा, जीवन हो उज्जवल ॥ ५ ॥



भजल ३९

(कितना हसीना चेहरा)

चाल- कितना सुंदर जीवन, मिला है मानवतन
मिला है मानवतन, उसमे रहता भगवन
संत चरण जाना होगा छुड़ाने सबबंधन

कितनी उमरिया बीत गई
मुख में हरी का नाम नहीं
द्वेष भावना, मिटी नहीं
कैसे मिले कृष्ण कन्हारी,

सत्कर्म जो करता, प्रभू को वो नर भाता
प्रभू को वो नर भाता निभाता उसका वचन
सतो ने बनाया देखो दानव को इंसान

॥ १ ॥

सत्य वचन में रमता राम,
झूठे वचन से, होता पाप,
निरखे जब, आप में आप
मिट जाता है त्रिताप

दया प्रेम की वाणी, करे जो अच्छी करणी
करे जो अच्छी करणी, मिलता है पद निर्वाण
संत वचन में छुपा है, मानव का कल्याण ॥ २ ॥

पापी वाल्या, बना वाल्मिकी

संत संग से भ्रमणा मिटी,

जग मे रही उसकी कीर्ति,

संत चरण जो जाता, वो नरनारायण बनता

वो नारायण बनता, होता उसका पूजन

सत कृपा से राम और कृष्ण, हो गये भगवान ॥ ३ ॥

भजन ४०

(चाल- कर्मों में सुंदरता)

टेक- मानवता को ऊंचा उठाओ, तभी सच्चा सुख पाओ
यही नारा अमल में लाओ, धर्म निति अपनाओ

भक्ति पंथ यही महान, धर्म निति से चलते रहे
एक दुज से मित्रता रख कर, सुख दुःख में साथ देते रहे,
ऐसी भावना सबमें जगाकर, यहि नाता निमाओ ॥ १ ॥

जितना समझे उतना बोली, तभी बोल का होगा मोल,
व्यर्थ की जुबा ना खोले, नही तो होगा बोल का फोल,
चूप रहना उससे अच्छा, व्यर्थ समय न गमाओ ॥ २ ॥

कर्म है सबके न्यारे- २, परखे विन न उजियारे,
जैसे नाना जेवर सुन्ने के, वैसे उसके तेवरे,
इंसानियत ही सच्ची निशानी, व्यवहार को सुधारो ॥ ३ ॥

जैराम कहे सद्गुण ही जात,
ना किसी से पक्षपात ।
जड़ चेतन मे एक ही सार,
मानव २ से करले प्यार ।
पंथ बाजी मे कोई न भूले,
उसको हरदम ठुकराओ कर्मों . . . ॥ ४ ॥

भजन ४१

(चाल- मुजरिम)

टेक- है वैसे करते नहीं, मूँह के बड़े है लवाड़
इसीलिए मानवता का हो रहा बट्याघार

करनी और कथनी में, बहुत बड़ा है अंतर
झूठ मूठ की जाल बनाकर, भूल भूलैया का देते मंतर
ऐसे लोगों से देश और,
समाज में हो रही गड़बड़... कहते- ॥ १ ॥

समता राज का है ये सपना, साकार हमको है करना,
गरीब और अमीर, एकता से हमको है चलना,
अपना जीवन सुखमय करो,
छोड़ो लंबी चौड़ी बड़बड़... कहते- ॥ २ ॥

अज्ञानी को ज्ञान देना, विद्वानों का है काम,
दया धर्म की राह बताना, इसमें मिले सम्मान,
सतयुग का हर इंतजार करे,
समता से अब नाता जोड़... कहते- ॥ ३ ॥

कहे दास जेराम भारतवासियों, सावधान अब, तुम हो जाओ,
दीन दुखियों को गले लगाओ, तभी सच्ची सुख शांति पाओ,
इसमें तुम्हारी भलाई है,
सरकर्मों से नाता जोड़... कहते- ॥ ४ ॥

भजन ४२

(चाल- देश प्रेमी)

टेक- पुरखों के वचन निभाओ
सही राहो पे जीना सीखो
अपनी मेहनत पर जीओं
मेरे विश्व के प्रेमियों... 5
मेरे विश्व प्रेमियों जिम्मेदारी निभाओ

साथ, जो देता समय पर
उसको समझो माता पिता...
उसका वचन न कभी भूलो
यही सच्ची हैं मानवता
हिल मिल कर तुम चलना सीखो
सबकी भलाई दिल में रखो
अमर किर्ती छोड़ो ऐसी, यादगारी रखो
काम राम का नाता जोड़ो... मेरे

॥ १ ॥

छोड़ो झूठे सपने, आयुष्य
न गमाओ अपने,
अमोल, जीवन को, बर्बाद न तुम करो
भाई-चारे का नाता जोड़ो
किसी का दिल न तोड़ो
सत्कर्म में मर्म छुपा है
जैसे दूध में घी हैं
मित्रो परखकर चलो... मेरे ॥ २ ॥

कहे, जैरामदास, दया, धरम रखो पास
हृदय में होयें, नम्रता का वास,
चारो ओर बिखरेगे
किर्ती उसकी ये महान
तन मन धन को करो अर्पण
दृढ़ हो संकल्प तुम्हारा
समाज के वास्ते मरो... मेरे

॥ ३ ॥



भजन ४३

(हर करम अपना करेगें)

टेक- ठोकर खाओगे ठुकराने वाले,
ऐ गवँ गुमान वाले- २
ना करो किसी की बुराई,
जीव प्राणी की दया ले ले ... ठोकर

मालिक हमारा है एक
काम करेंगे हम नेक
रूप है उसके अनेक
पूरा करो अपना वादा
ए इसा कहलाने वाले,
इसानियत न भूले ठोकर ॥ १ ॥

वो ही तीरथ है, वो ही इसाफ है
कहां भटक रहा पगले
मत लगा फंदे गले
तू ही कर्म है, तू ही धरम है
परखे विन तू है अनजाना
पराया दुख तूने न जाना
मरना मिटना खेल है तन का
ऐ मूखं छोड झूठी चाले ... ठोकर ॥ २ ॥

जन्म लेकर घरती पर आया
क्या खोया और क्या पाया
आत्म तत्व तूने न परखा
आवागमन न तेरा चूका
परख ले अपनी गलतियां
ऐ अब तू रे पगले ठाकर ॥ ३ ॥

जेरामदास कहे सुख शांति है पाना
इहलोक है मुसाफिर खाना
है चिड़िया अब रैन वसेरा
सांव को पकड़े जैसा सपेरा
ऐसा खेल है रे तेरा
ऐ मानव कहलाने वाले . . . ठाकर ॥ ४ ॥

भजन ४४

(चाल- आ जा रसिया)

(विचार शक्ति ज्ञान शक्ति से बड़ी है)

टेक- ओ रे मनवा- २ संतो के वचनो पर
चल होगा जीवन सफल

धर्म अर्थ काम मोक्ष मिलें चारों कल

अमर कीर्ति तेरी रहेगी

भारत भू के छोरे, लगा जय हिंद के नारे
कर ले जीवन नैया पार, ले ले संत चरण का बल

ओ रे मनवा . . . ॥ १ ॥

शील नम्रता के भाव रख मन मे

रखना ख्याल ये अपना वतन

धर्म नीति का कर ले जतन

जप हरी नाम तेरे संकट होंगे हल- २

ओ रे मनवा . . . ॥ २ ॥

यहां जन्म लेकर आया बंदे

छाड़ दे तू झूठ-मूठ के घघे

दीन दुखियों को लगा ले कंधे

प्रेम की बोली अब तू बोल- २

ओ रे मनवा . . . ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे शांति की खबर

अहिंसा परम धरम का तेरा नारा

सुखमय होये सभी के जीवन

होगा समाज तेरा उज्जवल- २

ओ रे मनवा . . . ॥ ४ ॥

भजन ४५

(तेरी दुनिया से दूर)

मित्र तू मेरा दिलवर,
जीवन हैं तेरे बल पर
दिजिए प्रभू ऐसा वर
है तमन्ना ऐ मेरी, न सताये कभी
मुझे चिंता फिर

ऐसी मेरी आशा, दे मुझे दिनासा, न भूलू मानवता
न हो किसी की हरकत, सबको मिले वरकत, यही मेरी इच्छा- २
एकता की भावना, सुखी होवे जीवन, मिले शांति की खबर
है तमन्ना ये मेरी . . . मित्र ॥ १ ॥

सबसे होये प्रीति, आये सत्कर्मों की नीति ! व्यवहार रहे प्रगति
आये न मन में कभी गंदे विचार भरा रहे सदाचार- २
जीवन नया होये पार सत्सग का मिले सार
सग बना रहे गुरुवर

है तमन्ना ये मेरी . . . मित्र ॥ २ ॥

कोई नहीं साथी है मुझको मिला सारा विश्व ढंढा
तेरे विना दूजा न कोई मुझको इस जग में दिखा- ३
बिते भ्रम मे उमर, आयुष्य जा रहा पल- २

है तमन्ना ॥ ३ ॥

दास जैराम कहे, अजब तेरा है खल निराला
पृथ्वी जल पवन आकाश अग्नि में, तू ही तू भर- ३
कैसा रखा तूने अंतर, सबका तू ही एक मंतर
माया सब तेरी दिगम्बर

है तमन्ना ॥ ४ ॥

भजन ४६

(चाल- तुझे न देखू तो चैन आता नहीं)

टेक- संत संगत मे मिलते हैं चारो फन
कर लो भाई अपना जं बन सफल
होवे न मन कभी हल चल-

कितना भी होवे अभाग
तकदीर उसका तभी जागा
कर्महीन बन जाये भागवान
बन जाये मूर्ख भी ज्ञानवान
संत है रेख के उपर मेख
सत्यवान भी बच गया भक्ति के बल - २
होवे . . . ॥ १ ॥

कितनी पापिनी वेश्या गनिका
बाल्या ने राम नाम उचचारा
पाप मिट गया उसके मनका
जीवन नैया लगी किनारा
ऐसी संत संगत की हैं महिमा
कठिनाई से पापी होता हल
होवे . . . ॥ २ ॥

कर्म जुडा है धर्म से
पालन करे जो निति नियम से
काल उसे कभी न बांधे
साधक वाचा मनसा साधे
त्रिताप से वो छुट जाये
अंतर आत्मा के है ये बोल- २
होवे . . . ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे दृढ़ता पर विश्वास
शास्त्र पुराण का यही इतिहास
भेदिया भेद को जाने
हुआ उसका जीवन उज्ज्वल
होवे . . . ॥ ४ ॥



भजन ४७

(परम पूज्य श्री संत लहरी बाबा की आत्मकथा)

टेक- गरीबों को समझे गरीबी का दर्द
मिटाते हैं उनके वे ही मर्ज . . . गरीबों

न खाने को अन्न है, न रहने को घर
भटकते हैं रहते ये दर दर
मुसीबत है बीती जिन पर ऐसी- २
ये ही मिटाते हैं इनका कर्ज . . . गरीबों ॥ १ ॥

भोगा है जिसने ऐसी सजा
कर्मयोग से बन गया है राजा
भूलता नहीं अपनी बीती बातें- २
सुनता है उनकी वो ही अर्ज . . . गरीबों ॥ २ ॥

पर दुख उनका जिन्होंने जाना
अपने पर से दुनिया को पहिचाना
उसे समदृष्टा समाज सेवक कहना- २
भटकते हुये का बनाया कारण . . . गरीबों ॥ ३ ॥

कहता जंराम सच्चा वही गुणवान
वक्त आने पर अपना देता है प्राण
भरोसा रखो उनके वचनों का- २
वो ही दुनिया का इक है,
सच्चा मर्द . . . गरीबों ॥ ४ ॥



भजन ४८

(अमीरों की शान)

दोहा- गरीबी से गुजरा जौ सच्चा नर
दिल मे रखकर इमानदारी
कितना भी सकट आये
चलता है धैर्य रखकर

टेक- गरीबों की मेहनत से जगता वतन
भूलो न कभी धनवान गुणवान

उनका ही देखो आज हो रहा बेहाल

न पेट भर खाते, न मिलता आटा दाल

यहां झूठे झूठे इन पे डालते है जाल- २

जर-जर हो गया, देखो इनका तन ॥ १ ॥

तडपते है रहते बीबी और वच्चे

मेहनत पर पलते उनकी, है कई लुच्चे

पल रहे हैं कितने निठल्ले दलाल- २

कहां छुप गये आओ मेरे भगवान ॥ २ ॥

आज लग रही है सच्चे को फांसी

अन्यायियों को आ रही है हँसी

इमानदार का हो रहा है हलाल- २

मानवता का हो रहा पतन... गरीबों ॥ ३ ॥

कहता जैराम कर्म धर्म डून रहा

बुरी गंदगी में समाज बह रहा

अन्याय से बचाओ भोली जनता- २

नही दिये ध्यान, तो होगा पतन... गरीबों ॥ ४ ॥



भजन ४९

(तर्ज- कस्मे वादे प्यार वफा सब)

टेक- जो समय पर करता काम
उसका तुम करना सम्मान
वो ही समझो है भगवान

संबंध जोड़ो मानवता से
इर्ष्या न रखो जाति, पाती से
वचन न जिसने अपना टाला
वो ही है अपना रखवाला- २
वो ही है सच्चा इंसान... जो ॥ १ ॥

अपने पटते हो जिनको विचार
करते जा उससे व्यवहार
उसका करो हर वक्त सम्मान... जो ॥ २ ॥

जिससे जुड़ते हो अपने तत्व
उससे जोड़ो प्रेम बंधुत्व-- २
जैरामदास कहता अपना विचार... जो ॥ ३ ॥

भजन ५०

(घूँघट की आड)

टेक- संत कृपा से भगवन का
दीदार यकी में होता है...
जब तक न पड़ें गुरु की नजर
उद्धार अघूरा रहता है...

जन्मों- २ तक भटका फिर मानव तन मिला
कैसे पाऊं तुम्हे जीवन विरथा चला
जकड़ती ही जाये माया मोह कौ झंझटे हो...
सत्कर्मोंके अभाव में, वैराग्य अघूरा रहता है

जब तक ॥ १ ॥

नाना यत्न करे फिर भी दिखे न ज्योति
कैसे पाये जीव सुख और शांति
मन में कल्प और विकल्प उठते ही जाते हैं...
भक्ति भाव के अभाव मे परमार्थ अघूरा
रहता है ॥ २ ॥

कहता जेरामदास प्रभू नैनो का है तारा
सब में रहकर भी है वो
सबसे न्यारा... जन्म मरण छूट
गया मिल गया निज स्वरुप हो...
गुरु आज्ञा के अभाव मे... सत्संग अघूरा

रहता है ... संत ॥ ३ ॥

भजन ५१
(चाल-स्वतंत्र)

टेक- नहीं काम की भरी दया
न सुख जीवन में पाया
यहां वहां ठोकर खाया

सत्य असत्य को परखा ना जिसने
झूठ-मूठ को भी समझा अपने
राम नाम लगा है जपने
अपने विचार का परख न किया ॥ १ ॥

वह भूला है माया ममता
अधकार मे जीवन बीता
समझा नहीं सत्य का रास्ता
क्षिण हो गई उसकी काया ॥ २ ॥

बैरंग जगत से नाता जोड़ा
अंतरात्मा का नाता तोड़ा
अपने को आप है वो भूला
इहलोक परलोक का सुख न पाया ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे प्रपंच में पड़ा बाधा
प्रपंच कैसा होवे सीधा
ज्ञानी रहा वो बाधा
दोनो तरफ से वो गया...नही ॥ ४ ॥



भजन ५२

(स्वतंत्र)

परखे आत्मज्ञानी आत्म तत्व
जीवन का यही है सच्चा महत्व

पाया अखंड शांति
निकली उसकी प्रांति
करे न दोस्ती वो किसी की
बुराई न करे वो किसी की
पालन किया अपना कर्तव्य... ॥ १ ॥

भरोसा उसका आत्मराम पर
रखता न भरोसा तन और मन पर
तत्व किसी ने आदीत्व
वना वो ब्रम्ह बोधिष्ट
लूट न सके उसे कोई दुष्ट
वो ही पद पाया देवत्व... परखे ॥ २ ॥

जैरामदास कहे पाया सच्चा साथ
दुनिया में किया अपना विकास
वही है सच्चा भाग्यवंत
निभाया उसने अपना व्रत ॥ ३ ॥

भजन ५३

(स्वतंत्र)

टेक-- होती किमत दुनियां में वचन की
सुंदरता है वो मानवता की

नीति से वो जोड़ा नाता
न्याय को माना अपना पिता
जाति में भरी है पक्षपाती
माया की है उनकी नीति
प्यास न बुझी उनके मन की ॥ १ ॥

मतलब के हैं भाई भतीजा
सकट समय में उल्टा नतीजा
कोई न दीड़े अपने काजा
तब याद आती है वतन की... ॥२॥

सत्यवान अपने, सत्यता पर अटल
काल का न रखता कभी वो डर
कथा सत्यवान सावित्री की
कीर्ति रहती सुकर्म की
रक्षा किया अपने धर्म की... ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे प्राण से बड़ा
निभाया जिसने दुखियों का दुखड़ा
कदर किया जिसने रतन की... ॥४॥



भजन ५४

(मेरी दोस्ती मेरा प्यार)

टेक- मानवता से करता प्यार
उसकी किसी से न तकरार
वही है समाज का सरदार

सज्जनता से उसका नाता
प्रेम की वाते सबसे बोलता
बलबुते पर अपने जोता

किया उसने अपना उद्धार... मानवता से ॥ १ ॥

कार्य कौ फिकर रखता अपने
देखा न किसी के बुरे सपने
भेद न रखता परायें अपने
ऐसा करे वो व्यवहार... मानवता से ॥ २ ॥

अपने काम से काम रखता
उससे ही अपना जीवन बिताता
उसमे ही सुख शांति पाता
उसमे उसका लेता सार ॥ ३ ॥

अपने हित की रखे चिंता
नेय्या पार होवे कैंसी भगवंता
करता है इसका हरदम बीचार
नेय्या अड़ी है मझदार ॥ ४ ॥

जैरामदास कहे भलाई से प्रीति

ऐसे लोग है मेरे साथी

ऐसी मेरी है हस्ती

यही मेरा है क्षंगार... मानवता से ॥ ५ ॥

भजन ५५

(जय माता दी)

दोहा- सुकर्म नीति जो करते हैं
उनके लिए प्रभू, दीड़े आते हैं
वचन न खाली होने देते हैं
सेवकाई का नाता निभाते हैं

टेक- जय मानव की . . . S S S S -

धर्म नीति से चलना है, देश की रक्षा करना है
होSS मातृ भूमि के सपूतों, नाता यही निभाना है...

तन छुटने पर कीर्ति रहेगी

यादगारी दुनिया में रह जायेगी

क्षण भंगूर है, काया तेरी

विताता उमरिया, मेरी मेरी

होSS इस धरती पर राजा फकीर

सब को इक दिन जाना है . . . ॥ १ ॥

कर्म क्षत्र परखते चलो, सत्य कर्म को कभी न भूलो

सबके हित की बातें बोलो, माया ममता में न डलो

होSS बड़ी कठिन हैं मजिल की राहें

इसको पूरी करना है . . . धरम . . . ॥ २ ॥

जन्म लेकर इस, धरती पे आये

कार्य अपने, निभाते जाये

समय न अपना भूल पाये

वक्त का इंतजार, करता रहे

होSS मानव मानवता से मिलकर

इहलोक से परलोक जाना है . . . ॥ ३ ॥

हम भी तो एक, मुसाफिर है
सफर करने को आये हैं
कुछ देना हैं कुछ लेना है
हमे नर से नारायण बनना है- २ ॥ ४ ॥

जैरामदास कहे करनी का फल
सही राहो से होता हल,
आत्माज्ञान का जिसे है बल
उसका जीवन हुआ उज्ज्वल
हो ऽ इसानियत के इसाफ से,
परधाम हमे पाना है . . . निति
प्रेम से बोलो जय मानव की
हो सारे बोलो जय मानव की
हो मिलकर बोलो जय मानव की, जय मानव की ॥ ५ ॥

